५. प्राचीन भारत में धार्मिक विचार

५.१ जैन धर्म
५.२ बौद्ध धर्म
५.३ यहूदी धर्म (ज्यू धर्म)
५.४ ईसाई धर्म
५.५ इस्लाम धर्म
५.६ पारसी धर्म

वैदिक युग के अंतिम चरण में यज्ञविधियों की छोटी-छोटी बातों को अनावश्यक महत्त्व प्राप्त हो गया था । इन छोटी-छोटी बातों का ज्ञान केवल पुरोहित वर्ग को ही था । अन्य वर्गों को उन बातों का ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता नहीं थी । वर्णव्यवस्था के नियम और बंधन अत्यंत कठोर बनते गए थे । मनुष्य के कर्म और पुरुषार्थ की अपेक्षा उसका जन्म किस वर्ण में हुआ; इसपर समाज में उसका स्थान निश्चित किया जाने लगा । परिणामस्वरूप उपनिषदों के समय से ही धर्म का विचार यज्ञविधियों तक सीमित न रखते हुए उसे अधिक व्यापक बनाने के प्रयास प्रारंभ होते दिखाई देते हैं, परंतु उपनिषदों में आत्मा का स्वरूप, आत्मा का अस्तित्व जैसी बातों पर विचार किया गया था । ये विचार सामान्य लोगों को समझने में जटिल प्रतीत होते थे । अत: विशिष्ट देवताओं/ईश्वर की उपासना पर बल देनेवाले भक्ति पंथों का निर्माण हुआ । जैसे- शिव जी के भक्तों का शैव पंथ और भगवान विष्णु के भक्तों का वैष्णव पंथ । इन देवताओं के विषय में भिन्न-भिन्न पुराण लिखे गए ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में सामान्य मनुष्य सरलता से धर्म को समझ सकें; ऐसा धार्मिक विचार प्रस्तुत करनेवाली धाराएँ निर्माण हुईं । प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की उन्नति का मार्ग खोजने की स्वतंत्रता प्राप्त है; इसका बोध अनेकों को हुआ । इसी बोध द्वारा कालांतर में नए धर्मों का उदय हुआ । इन धर्मों ने पूरी स्पष्टता से यह कहा कि व्यक्ति की उन्नति के लिए जात-पाँत के भेदभाव को कोई महत्त्व नहीं है । इन धर्मों ने लोगों के मन पर शुद्ध आचरण का महत्त्व अंकित किया । नए धार्मिक विचारों के प्रवर्तकों में वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध के कार्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं ।

५.१ जैन धर्म

जैन धर्म भारत के प्राचीन धर्मों में एक धर्म है । इस

वर्धमान महावीर

धर्म में 'अहिंसा' सिद्धांत को विशेष महत्त्व प्राप्त है । धर्म के ज्ञान को जो व्याख्यायित करता है; उसे जैन धर्म में तीर्थंकर कहते हैं । जैन परंपरा के कथनानुसार कुल २४ तीर्थंकर हुए । वर्धमान महावीर जैन धर्म की परंपरा में चौबीसवें तीर्थंकर हैं ।

वर्धमान महावीर (ईसा पूर्व ५९९ से ईसा पूर्व ५२७)

हम जिस राज्य को बिहार के नाम से जानते हैं; उस राज्य में प्राचीन काल में वृज्जी नामक एक महाजनपद था । वैशाली उसकी राजधानी थी । वैशाली नगर के एक क्षेत्र-कुंडग्राम में वर्धमान महावीर का जन्म हुआ । उनके पिता का नाम सिद्धार्थ और माता का नाम त्रिशला था ।

वर्धमान महावीर ने ज्ञानप्राप्ति हेतु गृह त्याग किया । साढ़े बारह वर्ष तपस्या करने के उपरांत उन्हें ज्ञानप्राप्ति हुई । यह ज्ञान 'केवल' अर्थात 'विशुद्ध' स्वरूप का था । अत: उन्हें 'केवली' कहा जाता है । शरीर को सुखदायी अनुभव होनेवाली बातों से होनेवाला आनंद और दुखदायी बातों से होनेवाली पीड़ा का स्वयं पर कुछ भी प्रभाव न होने देना ही विकारों पर विजय प्राप्त करना है । ऐसी विजय उन्होंने प्राप्त की । अत: उन्हें 'जिन' अर्थात 'विजेता' कहा जाने लगा । 'जिन' शब्द से जैन शब्द उत्पन्न होता है । विकारों पर विजय प्राप्त करनेवाले महान वीर । अत: वर्धमान को महावीर कहा जाता है ।

ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात लोगों को धर्म समझाने अथवा धर्म का मार्गदर्शन करने के लिए उन्होंने लगभग तीस वर्षों तक उपदेश किया । लोग धर्म को बड़ी सहजता और सरलता से समझ सकें; इसके लिए वर्धमान महावीर लोगों से लोकभाषा 'अर्धमागधी' में बातचीत करते थे । उनके द्वारा बताया गया धर्म शुद्ध आचरण पर बल देता है । शुद्ध आचरण के लिए उनके बताए हुए मार्ग का सार स्वरूप पंचमहाव्रत और त्रिरत्न में समाविष्ट है । लोगों को उपदेश करते हुए तीर्थंकरों की जो सभाएँ होती थीं; उन्हें अर्धमागधी भाषा में 'समवसरण' कहते थे । ये समवसरण समानता भाव पर आधारित थे । इन समवसरणों में सभी वर्णों के लोगों को प्रवेश था ।

पंच महाव्रत : जिन पाँच नियमों का पालन बड़ी कड़ाई और कठोरता से करना पड़ता है; उन्हें पंच महाव्रत कहते हैं ।

१. अहिंसा : किसी भी सजीव को चोट पहुँचेगी अथवा उसकी हिंसा होगी; ऐसा आचरण न करें ।

२. सत्य : हमेशा सत्य बोलें और सच्चाई के साथ आचरण करें ।

३. अस्तेय : 'स्तेय' शब्द का अर्थ चोरी करना है । दूसरे के स्वामित्व अथवा अधिकार की वस्तु को उसके स्वामी की अनुमति के बिना लेना चोरी करना है । चोरी न करना अर्थात अस्तेय है ।

४. अपरिग्रह : मन में लोभ होने से मनुष्य का झुकाव संपत्ति का संग्रह करने की ओर रहता है । इस प्रकार संग्रह न करना अपरिग्रह कहलाता है ।

५. ब्रह्मचर्य : शरीर को सुखद अनुभव होने वाली बातों का त्याग कर व्रतों का पालन करने को ब्रह्मचर्य कहते हैं ।

त्रिरत्न : १. 'सम्यक् दर्शन', २. 'सम्यक् ज्ञान' और ३. 'सम्यक् चारित्र' ये तीन सिद्धांत त्रिरत्न हैं । सम्यक् का अर्थ 'संतुलित' होता है ।

१. सम्यक् दर्शन : तीर्थंकरों द्वारा दिए जानेवाले उपदेशों में निहित सत्य को समझना और उसके प्रति श्रद्धा रखना ।

२. सम्यक् ज्ञान : तीर्थंकरों द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों और सिद्धांतों का नियमित रूप से अध्ययन करना और उनके सूक्ष्म अर्थों को समझना ।

३. सम्यक् चारित्र : पंच महाव्रतों का कठोरता से आचरण करना ।

उपदेश का सार : महावीर द्वारा दिए गए उपदेशों में 'अनेकांतवाद' सिद्धांत का उल्लेख होता है । यह सिद्धांत सत्य की खोज के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । 'अनेकांत' शब्द में 'अंत' शब्द का अर्थ 'पहलू' अथवा 'अंग' है । सत्य की खोज करते समय विषय के किसी एक अथवा दूसरे पहलू अथवा अंग पर ध्यान देकर निष्कर्ष निकालने पर सत्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता । अत: उस विषय के अनेक पहलुओं अथवा अंगों का विचार करना भी आवश्यक होता है । इस सिद्धांत के कारण समाज में अपने विचारों के प्रति दुराग्रह रखने की प्रवृत्ति नहीं रह जाती और दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता निर्माण होती है ।

मनुष्य की महानता उसके वर्ण पर नहीं अपितु उसके उत्तम चरित्र पर निर्भर रहती है; यह सीख वर्धमान महावीर ने दी । वैदिक परंपरा में स्त्रियों के लिए ज्ञान प्राप्ति के मार्ग धीरे-धीरे बंद हो गए थे परंतु वर्धमान महावीर ने स्त्रियों को भी संन्यास धारण करने का अधिकार दिया । सभी प्राणियों से प्रेम करो । दूसरों के प्रति अपने मन में दया और करुणा का भाव बनाए रखो । जीयो और जीने दो; यह उपदेश उन्होंने किया ।

५.२ बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भारत और भारत के बाहर अनेक देशों में हुआ । गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे ।

गौतम बुद्ध (ईसा पूर्व ५६३ से ईसा पूर्व ४८३)

गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी वन में हुआ । उनके पिता का नाम शुद्धोदन और माता का नाम मायादेवी था । गौतम बुद्ध का मूल नाम सिद्धार्थ था ।

गौतम बुद्ध

उन्हें मानव जीवन का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ था। अत: उन्हें 'बुद्ध' कहा गया। मानव जीवन में दु:ख क्यों है? यह प्रश्न उनके मन में उत्पन्न हुआ । इसका उत्तर खोजने के लिए उन्होंने गृहत्याग किया। वैशाख पूर्णिमा के दिन वे बिहार के गया शहर के निकट ऊरुवेला नामक स्थान पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न बैठे थे । उस समय उन्हें 'बोधि' प्राप्त हुई । बोधि का अर्थ सर्वोच्च ज्ञान है । अब उस पीपल के वृक्ष को 'बोधि वृक्ष' कहते हैं और 'ऊरुवेला' नामक स्थान को 'बोधगया' कहते हैं । गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम

बोधि वृक्ष

प्रवचन वाराणसी के समीप सारनाथ में दिया । इस प्रवचन में उन्होंने जो उपदेश दिया; उसे 'धम्म' कहते हैं । इस प्रवचन द्वारा उन्होंने धम्म के चक्र को गति प्रदान की। अत: इस घटना को पाली भाषा में 'धम्मचक्कपवत्तन' कहते हैं । इसे संस्कृत में धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है । कालांतर में उन्होंने धम्म का उपदेश करने के लिए लगभग पैंतालीस वर्ष चारिका की । चारिका का अर्थ पैदल घूमना है । उन्होंने अपना उपदेश लोकभाषा-पाली में दिया । बौद्ध धम्म में बुद्ध, धम्म और संघ की शरण में जाने की महत्त्वपूर्ण संकल्पना निहित है । इस संकल्पना को 'त्रिशरण' कहते हैं । उनके द्वारा व्याख्यायित धम्म का सार निम्नानुसार है ।

आर्यसत्य : मानव जीवन के सभी व्यवहारों के मूल में चार सत्य हैं । उन्हें आर्यसत्य कहा गया है ।

१. दु:ख : मानव जीवन में दुख है ।

२. दु:ख का कारण : दु:ख का कारण होता है ।

३. दु:ख निवारण : दुखों को समाप्त किया जा सकता है ।

४. प्रतिपद : प्रतिपद का अर्थ मार्ग है । प्रतिपद दुखों का अंत करनेवाला मार्ग है । यह मार्ग शुद्ध आचरण का मार्ग है । इस मार्ग को 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं ।

पंचशील : गौतम बुद्ध ने पाँच नियमों का पालन करने के लिए कहा है । इन्हीं नियमों को 'पंचशील' कहते हैं ।

(१) प्राणियों/सजीवों की हत्या करने से दूर रहें ।

(२) चोरी करने से दूर रहें ।

(३) अनैतिक आचरण से दूर रहें ।

(४) असत्य बोलने से दूर रहें ।

(५) नशीले पदार्थों का सेवन करने से दूर रहें ।

बौद्ध संघ : अपने धम्म का उपदेश करने के लिए उन्होंने भिक्खुओं का संघ बनाया । गृहस्थ जीवन का त्याग करके संघ में प्रवेश करनेवाले उनके अनुयायियों को 'भिक्खु' कहते थे । बुद्ध के समान भिक्खु भी चारिका कर लोगों को धम्म का उपदेश करते थे । स्त्रियों का स्वतंत्र संघ था । उन्हें भिक्खुनी कहते थे । बौद्ध धर्म में सभी वर्णों और जातियों के लोगों को प्रवेश था ।

क्या तुम जानते हो ?

अष्टांगिक मार्ग :

१. **सम्यक् दृष्टि :** चार आर्यसत्यों का ज्ञान होना ।

२. **सम्यक् संकल्प :** हिंसा आदि बातों का त्याग करना ।

३. **सम्यक् वाक वाणी :** असत्य, चुगलखोरी, कठोरता और अनर्गल बातें न करना ।

४. **सम्यक् कर्म :** सजीवों की हत्या, चोरी और दुराचार से दूर रहना ।

५. **सम्यक् जीविका :** अवैध अथवा अनुचित ढंग से आजीविका चलाने के बदले उचित ढंग से चलाना ।

६. **सम्यक् व्यायाम :** व्यायाम का अर्थ प्रयत्न करना है । बुरे कर्म उत्पन्न नहीं होने चाहिए; और यदि हों तो उनका त्याग करें, इसी तरह अच्छे कर्म उत्पन्न होने चाहिए; अच्छे कर्म उत्पन्न होने पर उन्हें नष्ट नहीं होने देना चाहिए ; इसके लिए प्रयास करना ।

७. **सम्यक् स्मृति :** मन एकाग्र करके लोभ आदि विकारों को दूर करना । इसी भाँति अपने चित्त आदि को उचित पद्धति से समझ लेना ।

८. **सम्यक् समाधि :** एकाग्रता से ध्यान का अनुभव करना ।

उपदेश का सार : गौतम बुद्ध ने मानव बुद्धि की स्वतंत्रता की घोषणा की । वर्ण आदि के आधार पर मान्य विषमता को नकारा । जन्म के आधार पर कोई भी श्रेष्ठ अथवा कनिष्ठ नहीं बन जाता अपितु उसका श्रेष्ठत्व अथवा कनिष्ठत्व उसके आचरण के आधार पर ही सिद्ध होता है । 'नन्हीं-सी चिड़िया भी अपने घोंसले में स्वतंत्रता से चहचहाती है ।' उनका यह कथन विख्यात है और स्वतंत्रता तथा समता जैसे मूल्यों के विषय में उनके चिंतन को दर्शाता है । उन्होंने उपदेश किया कि पुरुषों के समान स्त्रियों को भी स्वयं की उन्नति करने का अधिकार है । यज्ञ जैसे कर्मकांड का विरोध किया । उन्होंने प्रज्ञा, शील आदि मूल्यों का उपदेश किया; जो मानव का कल्याण साध्य करते हैं । सभी प्राणिमात्र के प्रति 'करुणा' उनके व्यक्तित्व की असाधारण विशेषता थी ।

गौतम बुद्ध ने जिस सहिष्णुता का उपदेश किया; वह सहिष्णुता न केवल भारतीय समाज का अपितु संपूर्ण मानव जाति का आज भी पथप्रदर्शन कर रही है ।

लोकायत : प्राचीन काल में प्रचलित लोकायत अथवा चार्वाक नामक दर्शन भी महत्त्वपूर्ण है । इस दर्शन ने स्वतंत्र विचारों पर बल दिया था और वेदों की प्रामाणिकता को नकारा था ।

प्राचीन काल में भारत भूमि में नए-नए धार्मिक विचारों अथवा दर्शनों के स्रोत उत्पन्न होते रहें । कालांतर में ज्यू, ईसाई, इस्लाम और पारसी धर्म भारतीय समाज में घुलमिल गए ।

५.३ ज्यू धर्म (यहूदी धर्म)

ज्यू धर्म के लोग लगभग ई. स. पहली से तीसरी शताब्दी के बीच केरल के कोची में आए होंगे । ज्यू धर्म को 'यहूदी' धर्म भी कहा जाता है । ज्यू धर्म के लोग मानते हैं कि ईश्वर एक ही है । ज्यू धर्म न्याय, सत्य, शांति, प्रेम, करुणा, विनम्रता, दान देना, अच्छा बोलना और स्वाभिमान जैसे गुणों की सीख देता है । उनके प्रार्थना स्थानों को 'सिनेगॉग' कहते हैं ।

सिनेगॉग

५.४ ईसाई धर्म

ईसा मसीह (जीजस क्राईस्ट) ने ईसाई धर्म की स्थापना की । यह धर्म संपूर्ण विश्व में फैला हुआ है ।

ईसा मसीह के १२ शिष्यों में से एक सेंट थॉमस थे;जो ई. स. की पहली शताब्दी में केरल में आए थे । उन्होंने केरल के त्रिचूर जिले के पल्लयूर नामक स्थान पर ई. स. ५२ में चर्च की स्थापना की । ईसाई धर्म की सीख के अनुसार ईश्वर एक ही है और वह सभी का स्नेहमयी पिता है । वह शक्तिमान है । ऐसा माना जाता है कि ईसा मसीह ईश्वर के पुत्र हैं और मानव जाति का उद्धार करने हेतु धरती पर आए थे । ईसाई धर्म में बताया गया है कि हम सभी एक-दूसरे के भाई-बहन हैं । हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए । यहाँ तक कि शत्रु से भी प्रेम करना चाहिए । जिनसे अपराध हुआ है; उन्हें क्षमा करनी चाहिए । 'बाईबिल' ईसाई धर्म का पवित्र धर्मग्रंथ है । ईसाई लोगों के प्रार्थना स्थान को 'गिरजाघर' (चर्च) कहते हैं ।

गिरजाघर (चर्च)

५.५ इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास करता है । अल्लाह एक है और मुहम्मद पैगंबर उसके संदेशवाहक हैं । पैगंबर द्वारा ईश्वर का संदेश पवित्र कुरआन धर्मग्रंथ में व्यक्त हुआ है । 'इस्लाम' शब्द का अर्थ 'शांति' होता है । इस शब्द का अर्थ 'अल्लाह की शरण में जाना' भी होता है । इस्लाम में कहा गया है कि अल्लाह शाश्वत और सर्वत्र है । वह सर्व शक्तिमान और परम दयालु है । यह माना जाता है कि अल्लाह की उपासना करना ही मानव जीवन का उद्देश्य है । मनुष्य अपने जीवन में कैसा आचरण करे;इसका मार्गदर्शन पवित्र धर्मग्रंथ 'कुरआन' में किया गया है । प्राचीन समय से भारत और अरबस्तान के बीच व्यापारिक संबंध थे । अरबस्तान के व्यापारी केरल के तटीय बंदरगाहों पर आते थे । ई. स. सातवीं शताब्दी में अरबस्तान में इस्लाम का प्रचार-प्रसार हुआ । उसी शताब्दी में अरब व्यापारियों के माध्यम से भारत में इस्लाम का आगमन हुआ । इस्लाम धर्म के प्रार्थना स्थान को 'मस्जिद' कहते हैं ।

मस्जिद

५.६ पारसी धर्म

प्राचीन समय से पारसी लोग और वैदिक संस्कृति के लोगों के बीच संबंध थे । पारसी धर्म के पवित्र ग्रंथ का नाम 'अवेस्ता' है । 'ऋग्वेद' और 'अवेस्ता' ग्रंथों की भाषाओं में साम्य पाया जाता है । पारसी लोग ईरान के 'पार्स' (पारस) अथवा 'फार्स' (फारस) नामक प्रांतों से भारत में आए । अत: वे 'पारसी' नाम से जाने जाते हैं । सबसे पहले वे गुजरात में आए । कुछ लोगों का मत है कि वे ई. स. की आठवीं शताब्दी में आए होंगे । जरथुस्त्र(जरदुश्त) पारसी धर्म के संस्थापक थे । उनके ईश्वर का उल्लेख 'अहुर मज्द' नाम से किया जाता है । पारसी धर्म में अग्नि और जल तत्त्व को अत्यंत महत्त्व है । उनके मंदिरों में पवित्र अग्नि निरंतर प्रज्ज्वलित रहती है । इन मंदिरों को 'अग्यारी' कहते हैं । पारसी धर्म की विचारधारा के प्रमुख तीन आचरण तत्त्व - उत्तम विचार, उत्तम वाणी और उत्तम कर्म हैं और ये तीन आचरण तत्त्व पारसी धर्म की विचारधारा का सार है ।

अग्यारी

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(१) जैन धर्म में.....सिद्धांत को महत्त्व प्राप्त है ।

(२) सभी प्राणिमात्रों के प्रति.....गौतम बुद्ध के व्यक्तित्व की असाधारण विशेषता थी ।

२. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) वर्धमान महावीर ने कौन-सी सीख दी ?

(२) गौतम बुद्ध का कौन-सा वचन विख्यात है ? उस वचन द्वारा कौन-से मूल्य व्यक्त होते हैं ?

(३) ज्यू धर्म की सीख में किन गुणों पर बल दिया गया है ?

(४) ईसाई धर्म में क्या बताया गया है ?

(५) इस्लाम धर्म की सीख क्या कहती है ?

(६) पारसी धर्म की विचारधारा का सार क्या है ?

३. टिप्पणी लिखो :

(१) आर्यसत्य (२) पंचशील

४. नीचे दिए गए पंचमहाव्रतों और त्रिरत्नों का तालिका में वर्गीकरण करके लिखो :

(१) अहिंसा (२) सम्यक् दर्शन (३) सत्य (४) अस्तेय (५) सम्यक् ज्ञान (६) अपरिग्रह (७) सम्यक् चारित्र (८) ब्रह्मचर्य

पंचमहाव्रत	त्रिरत्न
(१).....	(१).....
(२).....	(२).....
(३).....	(३).....
(४).....	
(५).....	

५. कारण लिखो :

(१) वर्धमान महावीर को 'जिन' क्यों कहने लगे ?

(२) गौतम बुद्ध को 'बुद्ध' क्यों कहा गया है ?

उपक्रम :

(१) विभिन्न त्योहारों की जानकारी और चित्रों का संग्रह करो ।

(२) विभिन्न धर्मों के प्रार्थना स्थानों में जाओ और कक्षा में परिसर सैर का वर्णन करो ।

* * *